Volume-2, No. II, Aug-2015, pp. 112-115

विश्व शान्ति में धर्म और शिक्षा की भूमिका

डॉ० ओमप्रकाश प्रजापति
सनातन धर्म कालेज कंकरखेड़ा मेरठ उ0 प्र0 भारत।

1. प्रस्तावना

विश्व के किसी न किसी भू–भाग में अशान्ति सदैव रही है। इसलिये शान्ति स्थापित करने के प्रयास भी सदैव चलते रहे हैं। अशान्ति के अनेक कारण हैं–परतन्त्रता, ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और राजनैतिक। इन सभी कारणों से भुक्त भोगी केवल मनुष्य ही नहीं वरन् पशु–पक्षी और पर्यावरण भी है। अशान्ति के कारण मनुष्य के अन्तःकरण में भी हैं और बाह्य परिस्थितियों में भी। इसलिये शान्ति स्थापित करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं की दो धाराएं हैं। एक वे जिन्होंने मनुष्य की आन्तरिक परिस्थितयों के रूपान्तरण से शान्ति स्थापित करने के प्रयास किये हैं क्योंकि वे अशान्ति का कारण मनुष्य की आन्तरिक परिस्थितियों, अधार्मिकता, अनैतिकता और असामाजिकता को मानते हैं। उन्होंने अशान्ति बीज मनुष्य के अन्तःकरण में पाये हैं और वहाँ इन्हें उखाड़ कर धार्मिकता, नैतिकता, सामाजिकता और मनौवैज्ञानिकता के बीज बोए हैं और उन्हें विकसित कर शान्ति की बेलें फैलाई हैं। दूसरे वे जिन्होंने सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक बाह्य परिस्थितियों को परिवर्तित कर शान्ति स्थापित करने के प्रयास किये हैं, उन्होंने अशान्ति का कारण इन्हीं बाह्य परिस्थितियों को माना है शिक्षा की भूमिका, प्रथम धारा–मनुष्य की आन्तरिक परिस्थितियों अन्तःकरण के रुपान्तरण से अधिक और दूसरी धारा बाह्य परिस्थितियों के परिवर्तन से कम सम्बन्धित है।

2. शोध समस्या का कथन

विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिये धर्म और शिक्षा की भूमिका

3. शोध का उद्देश्य

(I) विश्व में शान्ति स्थापित करने में धर्म की भूमिका का अध्ययन करना।

(II)विश्व में शान्ति स्थापित करने में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।

4. शोध अध्ययन का औचित्य

अशान्ति चाहे व्यक्तिगत स्तर पर हो या वैश्विक स्तर पर, अशान्ति के कारण व्यक्ति का जीवन असन्तोष, तनाव और अवसाद से हिंसक, आत्मघाती और पतनोन्मुख हो जाता है। इसी प्रकार वैश्विक स्तर पर किसी देश में अशान्ति के कारण शस्त्रीकरण, गृह युद्ध और युद्ध पनपते हैं जिसमें राष्ट्र विकास के विपरीत पतनोन्मुख होता जाता है और उस देश की सम्पदा, संस्कृति और रचनात्मकता नष्ट हो जाती है। इसी कारण शोधार्थी ने इस शोध समस्या का अध्ययन किया है जिससे शिक्षा जैसी रामबाण औषधि से अशान्ति से मुक्त हुआ जा सके।

5. सन्दर्भ साहित्य का अवलोकन

शोधार्थी ने विश्व शान्ति स्थापित करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के सम्बन्ध में अध्ययन किया है। जिनमें स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, जे० कृष्णमूर्ति, गाँधी जी, ओशो और सन्तों जैसे धार्मिक क्षेत्र के महापुरुषों के मौलिक ग्रन्थों का प्राथमिक स्रोत के रूप में अध्ययन किया है। तथा सामाजिक, ऐतिहासिक व राजनैतिक ग्रन्थों; डॉ० राममनोहर लोहिया, कार्ल मार्क्स जैसे समाजवादी विचारकों पर लिखी गयी पुस्तकों का भी अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त रामायण और महाभारत महाकाव्य की टीकाओं का भी शोधार्थी ने अध्ययन किया है। इस प्रकार प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के साहित्यक स्रोतों का अध्ययन किया है। शोधार्थी ने इण्टरनेट के वेब पेजों से भी सूचनाएँ एकत्र की हैं।

6. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रार्थी ने ऐतिहासिक अनुसंधान विधि और पुस्तकालय अध्ययन का प्रयोग किया है। क्योंकि शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में वर्तमान समस्याओं का समाधान अतीत के अनुभवों के आधार पर किया जा सकता है। जिसमें तथ्यों का संकलन प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से, तथ्यों की आलोचना, तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, तथ्यों का विश्लेषण एवं विवेचन करते हुए शोध के निष्कर्ष प्राप्त किये हैं।

7. तथ्यों का प्रस्तुतीकरण– ऐतिहासिक काल में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध व विश्व शान्ति–

(I) प्राचीन भारत में छोटे–छोटे राज्य थे–उनके बीच शान्ति काल तथा युद्ध काल दोनों में पारस्परिक सम्बन्ध थे। ये सम्बन्ध अन्तर्राज्जीय सम्बन्ध थे न कि अन्तर्राष्ट्रीय क्योंकि वे सभी राज्य एक ही राष्ट्र भारत की विभिन्न पृथक्–पृथक् इकाइयां थे। हीरालाल चटर्जी के अनुसार अन्तरराज्य सम्बन्धों के विकास का पहला काल खण्ड वैदिक काल था। दूसरा काल खण्ड महाकाव्य (रामायण और महाभारत) काल था। तीसरा काल खण्ड सिकन्दर के विजय अभियान के साथ प्रारम्भ हुआ था। चौथा काल खण्ड बौद्ध और जैन धर्म के प्रभाव से अहिंसा के सिद्धान्त पर आधारित था। पाँचवाँ काल खण्ड पुराणों का युग था। अन्तिम काल खण्ड गुप्त वंशीय शासकों के पतन और मुस्लिम आक्रमण के बीच रहा।[1]

प्राचीन भारत में अन्तरराज्य सम्बन्धों के संचालन के लिये षाड्गुण्य नीति, (सन्धि, विग्रह, संश्रय, आसन, यान, द्वैधी भाव) कूटनीति के चार उपाय (साम, दाम, दण्ड, भेद) तथा मण्डल सिद्धान्त प्रमुख हैं। इनका उल्लेख वेद व्यास के महाभारत के शान्ति पर्व, चाणक्य के अर्थशास्त्र, मनु के मनु स्मृति, बाल्मीकि की रामायण, तुलसीदास के रामचरित मानस, शुक्राचार्य की शुक्रनीति, कामन्दक के नीतिसार आदि में है। इस प्रकार वेद व्यास, तुलसीदास, मनु महाराज, शुक्राचार्य, कामन्दक और चाणक्य जैसे विद्वान व शिक्षाशास्त्रियों ने अपने काल से आज तक शक्ति सन्तुलन राज्य व्यवस्था और शान्ति स्थापित करने में पथ प्रदर्शन किया है।

बौद्ध काल में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी सहित चौबीस तीर्थंकरों ने अपने ज्ञान, प्रेम और पवित्र आचरण से अनेक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। और वैदिक धर्म और सनातन धर्म के पाखण्ड के विरुद्ध स्वतन्त्रता और समानतावादी सामाजिक शान्ति व्यवस्था स्थापित की जिसकी ख्याति सम्पूर्ण एशिया में फैली चीन में लाओत्से ने, जापान में झेन सन्तों ने और अशोक सम्राट ने भारत वर्ष में बौद्ध धर्म के अहिंसा, प्रेम और शान्ति को विश्वव्यापी बनाया।

(II) मध्य काल में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध व विश्व शान्ति

मध्य काल में यूरोप में ईसाई धर्म की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार धर्मोपदेशकों और मिशनरियों ने पूरे विश्व में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के साथ किया। ईसामसीह की शिक्षायें निश्चित रूप से अहिंसा व प्रेम पर आधारित थी। लेकिन सत्तालोलुप ईसाई धर्माधिकारियों का राज्य सत्ता से अधिकारों के लिए संघर्ष छिड़ गया था। वर्चस्व स्थापित करने के लिए पूरे विश्व में परतन्त्र देश के नागरिकों का धर्मान्तरण लोभ, लालच व धोखा देकर किया और इसी काल में दास प्रथा भी लागू की गई जो आज भी जारी है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म का प्रचार और धर्मान्तरण मुस्लिम शासकों ने बलपूर्वक किया। इस काल में तुर्को, अरबों, यूनानियों, ईरानियों और मुगलों ने भारत सहित सम्पूर्ण एशिया और अफ्रीका महाद्वीप में बलपूर्वक सत्तायें स्थापित की। इस काल में शिक्षा विश्व शान्ति स्थापित करने में असफल सिद्ध हुई। शिक्षा केवल कला, साहित्य और सांस्कृतिक संवर्धन के रूप में यूरोप और एशिया में सफल रही। मध्य काल में व्यापार और वाणिज्य के कारण यूरोप, एशिया और अफ्रीका के देशों के बीच आर्थिक सम्बन्ध विकसित हुए और साथ ही ईसाई और इस्लाम धर्म में धर्मान्तरण तीव्रता के साथ फलीभूत हुआ। फिर भी अनेक भक्तों, सन्तों, कवियों और सूफी सन्तों ने धार्मिक, नैतिक और मानवीय गुणों को विकसित करने के व्यक्तिगत प्रयास किये। इनमें सेभारत में कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, शेख सलीम चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, राबिया, बाबाजान, साईं बाबा, चैतन्य महाप्रभु, मीराबाई, दादू, रैदास, सहजों, गुरूनानक, गोरखनाथ, रज्जब, जगजीवन तथा अनेक भारतीय दार्शनिकों में पंतजलि, आदि शंकराचार्य आदि की शिक्षाओं ने लोगों को एकता से सूत्र में बाँधा। मध्य एशिया में मुहम्मद साहब, जरथुस्त्र, हजरत मूसा और ईसा मसीह ने मानवता, प्रेम, शान्ति अहिंसा और ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित की।

(III) आधुनिक काल में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध व विश्व शान्ति

पुनर्जागरण काल में इटली, जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि देशों से सम्पूर्ण यूरोप में पुनर्जागरण की लहर फैल गई। इस काल में नवीन स्थानों की खोजों, यन्त्रों के आविष्कार मार्टिन लूथर किंग के धर्म सुधार आन्दोलन, लेखकों, कवियों और कलाकारों की रचनाओं का प्रचार प्रसार हुआ। शिक्षा के प्रचार प्रसार से लोगों में चेतना विकसित हुई फलतः मानवीय अधिकारों और स्वतन्त्रता की माँग यूरोप, एशिया, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अनेक उपनिवेशों में फैल गई। इस काल में अनेक युद्धों के

साथ प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध हो गए। पहली बार मित्र राष्ट्रों ने 6 और 9 अगस्त, 1945 को जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर परमाणु बम बरसाये। मानवीय इतिहास की क्रूरतम दुर्घटना ने सभी राष्ट्रों को विनाश की विभीषिका का पूर्व दर्शन करा दिया। विश्व शान्ति की माँग तो प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) से ही शुरू हो गई थी किन्तु लीग ऑफ नेशन की असफलता और बदले की भावना के कारण द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945)भी हुआ। तत्पश्चात् विश्व शान्ति के लिये 51 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर, 1945 को हो गई। जो विश्व शान्ति का प्रथम विश्व मंच, विश्व संसद या विश्व सरकार या विश्व पंचायत है। जिसकी प्रासांगिता और महत्ता अब और बढ़ गयी है। छः अंगों वाली संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ जिसके प्रमुख 6 उद्देश्य[2] हैं–

1. सामूहिक व्यवस्था द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा कायम करना और आक्रामक प्रवृत्तियों को नियन्त्रण में रखना।
2. अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान करना।
3. राष्ट्रों के आत्म निर्णय और उपनिवेशवाद विघटन की प्रक्रिया को गति देना।
4. सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित एवं पुष्ट करना।
5. निरस्त्रीकरण।
6. नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना।

द्वितीय विश्व के पश्चात् अनेक देशों ने विश्व शान्ति के लिये अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनाये जैसे गुट निरपेक्ष देशों का संगठन, राष्ट्रमण्डल (कामन वेल्थ), दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ, एमनेस्टी इण्टरनेशनल, रेड क्रॉस सोसायटी, पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट आदि। विश्व में शान्ति स्थापित करने हेतु कई देशों ने निःशस्त्रीकरण के लिए कई सन्धियाँ की है। जैसे–परमाणु अप्रसार सन्धि।

विश्व शान्ति के महत्व को समझते हुए स्वीडन का विश्व प्रसिद्ध नोबेल शान्ति पुरस्कार सन् 1901 से 2014 तक 103 व्यक्तियों और 25 संगठनों को दिया जा चुका है। जिसमें 2014 का नोबेल पुरस्कार भारत के सामाजिक कार्यकर्ता कैलाश सत्यार्थी तथा पाकिस्तान की छात्रा मलाला युसुफजई को दिया गया। विश्व शान्ति के लिए धर्म के नाम पर जेहाद आतंकवाद सबसे बड़ा खतरा है जो विश्वव्यापी है। वर्तमान में लगभग 300 संगठन और अनेक राजनेता, कलाकार, समाजसेवी, धर्मगुरू, लेखक और सृजनशील व्यक्ति विश्व शान्ति के लिए सतत् संलग्न है।

भारत के धर्मगुरु स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण मिशन, योगानन्द और योगदा सत्संग सोसायटी, श्री अरविन्द और ओरेविले, ओशो और ओशो कम्यून इण्टरनेशनल, जे० कृष्णमूर्ति और जे०के० फॉउण्डेशन , दलाई लामा, रवीन्द्र नाथ टैगोर और महात्मा गाँधी ने विश्व शान्ति में अभूतपूर्व योगदान दिया है। राजनेता डॉ० राममनोहर लोहिया, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री आदि ने विश्व शान्ति की दिशा में व्यक्तिगत और संगठनात्मक आजीवन कटिबद्धता दिखाई है।

8. तथ्यों का विश्लेषण एवं विवेचन

जे० कृष्णमूर्ति ने 11 अप्रैल, 1985 को संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व शान्ति सम्मेलन पर यह वक्तव्य दिया था–''हमारा मस्तिष्क युद्ध, घृणा, संघर्ष आदि के लिये संस्कारित हुआ है। विकास की लम्बी अवधि में वह संस्कारित हुआ है। मनुष्य के पास मस्तिष्क का एक ढाँचा है और विश्व में शान्ति लाने के लिये उस ढाँचे का टूटना आवश्यक है।''[3]

जे० कृष्णमूर्ति राष्ट्रवाद के विपरीत विश्व सरकार और विश्व नागरिकता का समर्थन करते हैं। विश्व के मानवतावादी और रहस्यदर्शी ओशो ने गाँधी जी और श्री अरविन्द की तुलना करते हुए कहा है–

''हिन्दुस्तान में दो विपरीत ढंग के प्रयोग पचास सालों में चले। एक प्रयोग गाँधी ने किया एक प्रयोग श्री अरविन्द करते थे। गाँधी ने एक–एक मनुष्य के चरित्र को ऊपर उठाने का प्रयोग किया उसमें गाँधी सफल होते दिखाई पड़े लेकिन बिल्कुल असफल हो गए। श्री अरविन्दों एक प्रयोग करते थे जिसमें वे सफल होते हुए नहीं मालूम पड़े नहीं सफल हो सके लेकिन उनकी दिशा बिल्कुल ठीक थी।''[4]

ओशो विश्व में अशान्ति का कारण तथाकथित धर्म को मानते हैं और वे वास्तविक धर्म को अन्तःकरण में खोजने के कहते हैं जहाँ शान्ति, सत्य और आनन्द है। ओशो के अनुसार–

''मनुष्य के अन्तःकरण की शिक्षा ही तो धर्म है। जीवन में जो भी अर्थ और आनन्द छिपा है वह सब इस शान्ति में प्रगट हो जाता है। और जीवन में जो सत्य है वह

उपलब्ध हो जाता है। वस्तुतः वह तो उपलब्ध ही था लेकिन अशान्ति में दिखाई नहीं पड़ता था और शान्ति में अनावृत होकर स्वयं के समक्ष आ पाता है। धर्म की शिक्षा साहस, विवेक और शान्ति की शिक्षा है।''[5]

स्वामी विवेकानन्द की विश्व में ख्याति शिकागो के 1893 में विश्व धर्म सम्मेलन में सम्बोधन से फैली है। वे कहते हैं–

''मानव जाति को जिस तीव्रतम प्रेम का अनुभव हुआ है वह धर्म से ही प्राप्त हुआ है। धार्मिक क्षेत्र के पुरुषों से ही संसार के अत्यन्त उदार शान्ति सन्देश प्राप्त हुये हैं फिर घोरतम निन्दा वाक्य भी धर्म में आस्था रखने वालों द्वारा ही कहे गये हैं। ..... सभी युगों और सम्प्रदायों और देशों के द्वारा मान्य यदि कर्तव्य का कोई एक सार्वभौमिक भाव रहा है तो वह है 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम' अर्थात् परोपकार ही पुण्य है और दूसरों को दुःख पहुँचाना ही पाप है।''[6]

गाँधी जी आजीवन अहिंसा और सत्याग्रह का पालन और प्रयोग धर्म के साथ सार्वजनिक जीवन में करते रहे। वे कहते हैं–

''जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है वह धर्म को जानता ही नहीं है।''[7]

इस प्रकार आत्म शान्ति से विश्व शान्ति तक गाँधी जी की श्रद्धा धर्म में अगाध थी।

डॉ० राममनोहर लोहिया भारत के ऐसे समाजवादी नेता थे जिनकी आस्था गांधी जी और कार्ल– मार्क्स दोनों पर थी उन्होंने धर्म को राजनीति में गाँधी जी की तरह समाहित करते हुए कहा है–

''राजनीति के बिना धर्म निष्प्राण हो जाता है तथा धर्म के बिना राजनीति कलह बन जाती है। धर्म दीर्घकालिक राजनीति है और राजनीति अल्पकालिक धर्म।''[8]

जवाहरलाल नेहरू, गाँधी जी के अनुयायी थे किन्तु वे उनकी नीतियों सिद्धान्तों के पूर्णतया पक्षधर नहीं थे। विश्व शान्ति की दिशा में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव उन्होंने ही रखी थी। शान्तिपूर्ण विदेश नीति के लिये वे सदैव प्रासंगिक रहेंगे।

9. निष्कर्ष– सृजन और विकास में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा में सृजन की तकनीक के साथ विनाश की भी सम्भावना है। इसलिये विश्व शान्ति स्थापित करने के लिये शास्त्र और शस्त्र दोनों की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये व्यक्तिगत स्तर पर सृजन और शान्ति के लिये कबीरदास जी का यह दोहा चरितार्थ होता है–

गुरू कुम्हार शिष कुम्भ है, बाहर बाहे ओट।
अन्तर हाथ संवार दे, बाहर मारे चोट।।

शिक्षा में सृजन और विध्वंश दोनों की ही सम्भावनायें हैं। विश्व विनाश के जितने अस्त्र, शस्त्र, मिसाइलें और नाभिकीय बम आज धरती पर उपलब्ध हैं उनसे कई बार पृथ्वी जीवन को नष्ट किया जा सकता है। दूसरी ओर शिक्षा व अनुसंधान से चमत्कारी उपकरणों, सुविधाओं, प्रणालियों से ज्ञान का विस्फोट हुआ है। इसलिये विश्व शान्ति के लिये गम्भीरता से प्रत्येक व्यक्ति और देश को प्रतिबद्ध होना पड़ेगा।दुष्ट व्यक्ति हो या देश वह अपने संसाधनों और क्षमताओं का प्रयोग नकारात्मक ही करता है जैसा ही नीतिशतक का यह संस्कृत श्लोक व्यक्त करता है–

''विद्या विवादाय, धनं मदाय; शक्ति परेशाम् , परपीड़नाय।''

अर्थात् विद्या या ज्ञान विवाद के लिये, धन या सम्पदा अहंकार के लिये तथा शक्ति दूसरों को परेशान करने के लिये दुष्ट व्यक्ति या संगठन का राष्ट्र दुरुपयोग करता है।विश्व में अनेक धर्म पर आधारित आतंकी संगठन और आतंकी देश हैं जो इस उक्ति को चरितार्थ करते हैं। इसी प्रकार रामचरितमानस में श्री राम ने समुद्र से लंका जाने के लिये तीन दिन विनती की किन्तु जब समुद्र देव ने समुद्री मार्ग प्रशस्त नहीं किया तब श्री राम ने शक्ति का भय दिखाया तब समुद्र देव ने सेतुबन्ध हेतु श्री राम व सेना को सहयोग किया।गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार–

विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।[9]

अहिंसा से दुष्ट व्यक्ति, समूह या राष्ट्र का मुकाबला नहीं किया जा सकता है। ऐसे अनेक ऐतिहासिक प्रमाण है। अहिंसा से व्यक्ति और समुदाय का ह्रदय परिवर्तन कर शान्ति की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है ऐसे भी ऐतिहासिक प्रमाण हैं। उदाहरणार्थ–गौतम बुद्ध ने अंगुलिमाल, आम्रपाली आदि का ह्रदय परिवर्तन तो कर दिया था लेकिन सभी दुष्टों, पतितों और निरंकुश शासकों पर कोई प्रभाव नही पड़ा। गाँधी जी ने भारत के कोने–कोने के अनेक लोगों को सत्य, अहिंसा का अनुयायी अपनी शिक्षाओं और प्रेमपूर्ण व्यवहार से बना लिया लेकिन अपने बेटे हरिलाल, नेता मुहम्मद अली जिन्ना, नाथूराम गोडसे और हिंसा करने वाले उपद्रवियों को प्रभावित नहीं कर पाये।

श्री कृष्ण ने अर्जुन और पाण्डवों को तो पाँच गाँव देकर साम्राज्य का बँटवारा करने के लिये राजी कर लिया था किन्तु दुर्योधन और दुःशासन सहित कौरव उन्हें बिना युद्ध के सुई की नोक भर जमीन देने को राजी नहीं थे। इसी कारण श्री कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के लिये राजी कर लिया था। अन्यथा वह तो सन्यासी होना चाहता था।

आधुनिक काल में भी सन् 1857 की क्रान्ति, 1947 की स्वतन्त्रता, देशी रियासतों का विलय, 1961 में पुर्तगालियों से गोवा की मुक्ति तथा 1954 में फ्रांसीसियों से पांडिचेरी की आजादी शक्ति प्रयोग द्वारा ही सम्भव हुई ,केवल अहिंसक आन्दोलनों से नहीं। जबकि जम्मू व कश्मीर का भारत में विलय होने के बावजूद भी पूर्णतः आज भी भारत के अधीन नहीं है।

अहिंसावादी बुद्ध के अनुयायी तिब्बती आज तक चीन के आधिपत्य के कारण निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जरथुस्त्र के अहिंसक अनुयायी पारसी विश्व के अनेक देशों भारत सहित शरण लिये हैं। इसी प्रकार इजरायल के यहूदी भी अपनी ही जन्मभूमि से वंचित अनेक देशों के शरणार्थी रहे।

अतः निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के अहिंसक उपायों मात्र से विश्व में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती है। शिक्षा द्वारा शस्त्र और शक्ति सम्पन्न होकर ही देशों के बीच शक्ति सन्तुलन और शान्ति स्थापित की जा सकती है।

10.धर्म निरपेक्षता स्थापित करने में शिक्षा की भूमिका

जन्म से लेकर जीवन भर एक ही धर्म के संस्कार और धार्मिक शिक्षा हमें अनुकूलित कर देती है। जिससे अन्य धर्मों के लिए रास्ते बन्द हो जाते हैं। और कुछ लोग धर्म के प्रति घृणा से भर जाते हैं। यहीं से सम्पूर्ण मानवीय व्यवहार हिंसक और क्रूर होने लगता है। किसी एक धर्म के अनुसार आचरण करना किसी की भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है। लेकिन यह स्वतन्त्रता प्रत्येक बच्चे से बचपन से ही छीन ली जाती है। प्रत्येक बच्चे को माता–पिता का धर्म विरासत में मिलता है। उसे अनेक धर्मो में से कोई एक धर्म चुनने की स्वतन्त्रता वयस्क होने के बाद ही मिलती है। लेकिन तब तक वह एक धर्म में बँध चुका होता है। और वह दूसरे धर्म के प्रति संशय, सन्देह से भर जाता है। जबकि लोकतंत्र में मतदाता के रूप में भारत में मताधिकार 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर ही मिलता है। यह एक विडम्बना है कि राजनैतिक प्रतिनिधि को मात्र 5 वर्ष के लिये चुनने के लिये बच्चे के निर्णय की क्षमता की अपेक्षा 18 वर्ष पश्चात् की जाती है जबकि जीवनभर के लिए धर्म का निर्णय जन्म से ही तय कर दिया जाता है। जैसे बाल विवाह का प्रचलन था जो अभी भी है। विवाह कानून भी हिन्दू और इस्लाम के अलग–अलग धर्म पर ही आधारित है। जन्म से व्यक्ति का कोई धर्म नहीं होना चाहिये। व्यक्ति एक परिपक्वता के पश्चात्, लगभग 18 वर्ष के बाद, विवाह के पूर्व वह किसी भी धर्म को ग्रहण करने के लिये शपथ ले और फिर कभी उसकी परीक्षा भी हो। उसे लिखित और साक्षात्कार के पश्चात् उपाधि के रूप में जिस धर्म की परीक्षा वह उत्तीर्ण करे और साक्षात्कार में सन्तोषजनक प्रतिपादन करे तब उसे किसी धर्म के दीक्षित माना जायें। तभी वह ठीक से धार्मिक हो सकेगा। इसके पश्चात् भविष्य में कोई व्यक्ति किसी दूसरे धर्म में जाना चाहे तो फिर वही प्रक्रिया शपथ, लिखित, साक्षात्कार की परीक्षा से गुजरे तभी व्यक्ति धर्म निरपेक्ष होगा। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने ऐसा ही प्रयोग किया था। ओशो भी इसी प्रकार आजीवन ध्यान विधियों के उपयोग सिखाते रहे हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता है कि वह अपने अन्तःकरण के कितने द्वार खोलता है। महावीर स्वामी ने कहा है कि मनुष्य बहु चित्तवान है ऐसा आधुनिक मनोवैज्ञानिक भी कहते हैं। ऐसे व्यक्ति को श्री अरविन्द ने अतिमानव तथा नीत्से ने सुपर ह्यूमन कहा है। अतः व्यक्ति के बहुधर्मी होने पर विश्व शान्ति अवश्य फलीभूत होगी।

हमें बहुधर्मी होना चाहिये अन्यथा धर्म निरपेक्षता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है, तभी दूसरे धर्मों का सम्मान होगा। हमें बहुभाषी होना चाहिए तभी हम सभी भाषाओं का सम्मान कर सकेंगे। यदि कोई यह कहे कि बहुधर्मी होना संभव नहीं है, तो यह दृष्टिकोण उचित नहीं होगा और हमारे प्रयास भी विश्व शान्ति की स्थापना में सार्थक नहीं होंगे।

विश्व शान्ति में धर्म और शिक्षा की भूमिका– सारॉश

जब से मनुष्य इस धरती पर जन्मा है तभी से विश्व में अराजकता थी और आज भी है। इसीलिए समाज के अग्रणी व्यक्तियों ने लगातार शान्ति स्थापित करने के प्रयास भी किये हैं । शिक्षा मूलतः वह मशाल है जिससे अनन्त दीपक जलाये जा सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं हैं। लेकिन विकृत चित्त और विध्वंसात्मक मानसिकता वाले इसका दुरुपयोग भी करते हैं। हिंसा,

हत्या, ठगी, साईबर अपराध और आतंकवाद इसी मानसिकता के दुष्परिणाम हैं। संस्कृत का यह श्लोक इसी मानसिकता का उदाहरण है–

'विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्ति परेशाम्, परपीड.नाय ।'

प्राचीन काल से अब तक जिन्होंने शिक्षा, विद्या या ज्ञान की ज्योति जलाई है, उन्होंने विश्व में शान्ति को ही स्थापित किया है। उनके बाद ही धर्म का संगठित रूप स्थापित किया गया है। फिर चाहे उनके अनुयाइयों ने शान्ति का विस्तार न करके अशान्ति का विस्तार किया हो। सर्व प्रथम शिक्षा का विस्तार भी धर्म संस्थापकों ने किया था। उनकी शिक्षा चाहे जिस रूप में हुई हो–औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक या अन्तर्ज्ञान से। इस बात की पुष्टि अनेक अनपढ. भक्त कवियों नें भी की है–

चार वेद छः शास्त्र में, बात मिली है दोय ;
दुःख दीन्हें दुःख होत है, सुःख दीन्हें सुःख होय।

जो शिक्षा हृदय में प्रेम विकसित करे , बुद्धि को निर्मल करे , मन को स्वस्थ रखे, चित्त के विकार दूर करे और अहंकार को न पनपने देः वही शिक्षा विश्वशान्ति के प्रसार में भूमिका निभा सकती है। फिर चाहे वह किसी भी देश , भाषा , धर्म और संस्कृति से आती हो । इसके लिए हमें सभी प्रकार के दुराग्रहों और पूर्वाग्रहों से मुक्त होना पडे.गा । शिक्षा ने व्यक्ति या संस्था के माध्यम से सदैव विश्वशान्ति की स्थापना मे भूमिका निभाई है और आज भी इसकी आवश्यकता है । हमें बहुधर्मी होना चाहिए अन्यथा धर्म निरपेक्षता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है ,तभी दूसरे धर्मों का सम्मान होगा । हमें बहुभाषी होना चाहिए तभी हम सभी भाषाओं का सम्मान कर सकेंगे । यदि कोई यह कहे कि बहुधर्मी होना संभव नहीं है, तो यह दृष्टिकोण उचित नहीं है और हमारे प्रयास भी सार्थक नहीं होंगें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. चटर्जी हीरालाल, उद्धृत, डॉ० परमात्माशरण, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थायें, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1995, पेज 462
2. फाड़िया बी०एल०, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 1996 ,पेज 91
3. कृष्णमूर्ति जे०, युद्ध और शान्ति, कृष्णमूर्ति फॉउण्डेशन इण्डिया वाराणसी, पेज 13
4. ओशो, 'शिक्षा–नये प्रयोग,' डायमण्ड पॉकेट बुक प्रा०लि० नई दिल्ली, 1999 ,पेज 109
5. ओशो, 'शिक्षा–नये प्रयोग,' डायमण्ड पॉकेट बुक प्रा०लि० नई दिल्ली, 1999, पेज 71
6. स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा, रामकृष्णमठ नागपुर, 1989, पेज 81
7. गाँधी मो०क० अनुवाद – 'सत्य के साथ प्रयोग', नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद, 1947, पेज 453
8. लोहिया राममनोहर उद्धृत बी०एल० फाड़िया, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, साहित्य भवन आगरा, 1994 पेज 394
9. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, 2001, दोहा 57, पेज 493